उषा देवी मित्रा के कथा-साहित्य में नारी-जीवन के बदलते स्वरूप

परंपरागत भारतीय समाज में नारी की हैसियत एक सुदीर्घ परिचर्चा का विषय रहा है। वैदिक युग में सम्मानजनक जीवन की अधिकारिणी नारी क्रमशः अवनति की ओर रवाना हुई। तब तक पुरुष शक्ति के मुकाबले नारी अर्थाधिकार एवं सत्ताधिकारों से वंचित रही थी। इधर सामाजिक व्यवस्थाएँ, अनमेल विवाह, बालविवाह एवं दहेज प्रथा के रूप में रूढ हो गई। इस परंपरा निसृत कठोर पाबन्दियों के पाशों से मुक्ति की कामना आधुनिक नारी को मान्य रही। तत्कालीन नारी जीवन आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज और थियोसोफिकल सोसाइटी द्वारा चलाये गये नारी-मुक्ति आंदोलनों से प्रणीत रहा। इन्हीं संस्थाओं ने नारी उद्धान में सशक्त सहयोग दिया। इस नये परिवेश से पूर्णतः अवगत नारी ने नई शिक्षा, नौकरी एवं अर्थ की ताकत से कानून और व्यवस्था को अपने अनुकूल ढालने की कोशिश की। नारी जीवन पर लक्षित उपर्युक्त परिवर्तन की ललक पहले पुरुष लेखन में अवतीर्ण हुआ। इस दौरान सर्जनशील महिला लेखिकाएँ अपने सोच-विचार को स्वच्छन्द रूप में कलम के मार्फत निसृत करने लगी। अतः बदलते हुए पारिवारिक संबन्ध, दहेज प्रथा, बालविवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह का निषेध आदि कुप्रथाओं के खिलाफ महिला लेखिकाओं ने आवाज़ बुलंद उठाया। महिला लेखन में नारी के स्वत्व एवं अस्मिता का तवारीख द्रष्टव्य है। इस अरसे के महिला लेखन नारी मन के अथाह तलों

की तलाश में सक्षम रही। इसमें समकालीन जीवन यथार्थ और अपने जीवनानुभवों को एक सूत्र में पिरोने की ज़बरदस्त कोशिश हुई। इस प्रयास में शैलकुमारी देवी, रुक्मिणी देवी, गिरिजा देवी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि प्रारंभिक महिला लेखिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इनकी रचनाएं नारी जीवन के बहुमुखी संकटों को उद्‌भासित एवं परिभाषित करने में सक्षम रही। इन्होंने स्त्री की नियति को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आलोकित करने की कोशिश की। इधर नारी मन के अवलोकन में आलोच्य लेखिका उषादेवी मित्रा का स्थान सर्वोपरी है। उषा जी नारी मन के गहराइयों में पैठकर उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक क्षमता का लोहा मनवाने में अग्रणी रही। शिक्षा, नौकरी एवं आर्थिक स्वावलंबन से गर्हित नारी मन के विलोक में उषा जी के कथा-साहित्य की पहचान-परख इस शोध-प्रबन्ध का प्रदेय है।

प्रथम अध्याय
उषादेवी मित्रा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में हिन्दी तथा बंगला साहित्य के मनीषी सर्जक उषादेवी मित्रा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सरसरी दृष्टि डाली गई है। बंगला की कोमल भावुकता से प्रणीत उषा जी ने सीधी-सादी एवं प्रभावशाली सर्जक का रूप धारण किया। बंगाल के विख्यात रचनाकार मामा सत्येन्द्रनाथ दत्त एवं दादू श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उषा जी के व्यक्तित्व के रूपायन में सहयोग दिए। इस प्रकार साहित्य और भाषा के माहौल में आविर्भूत उषा जी का साहित्यिक क्षेत्र में पदार्पण स्वाभाविक तौर पर हुआ। उषा जी ने बंगला में कविता के उत्सर्जन से अपनी रचनाधर्मिता का श्रीगणेश कर दिया। गांधीवादी विचारधारा से प्रणीत उषा जी ने प्रेमचन्द जी की उत्प्रेरणा से हिंदी साहित्य जगत में पदार्पण किया। प्रेमचन्द जी ने उषा जी की विशिष्ट भाषा निपुणता एवं नारी संबन्धी प्रगतिवादी रूख को प्रोत्साहन दिया। फलतः उषा जी ने अपने कथा-साहित्य में आशिक्षा, अज्ञान, अनमेल विवाह आदि सामाजिक पाबन्दियों से संत्रस्त नारी मन को शब्दबद्ध कर दिया। साहित्यिक दलबन्दी से मुक्त उषा जी की बहुमुखी प्रतिभा का प्रस्फुटन उनके कथा-साहित्य में स्पष्टतः परिलक्षित हुआ है।

उषा जी का रचना संसार निजी अनुभवों एवं अनुभूतियों से प्रणीत है। जबलपुर के अस्पर्शित ग्रामीण परिवेश ने उषा जी के कथा-साहित्य की पृष्टभूमि में प्रतिष्ठा पाई है। उनका कथा-साहित्य नारी जीवन की स्वस्थ छवि की खोज में सक्षम दीखती है।

दूसरा अध्याय
हिंदी कथा-साहित्य में
महिला लेखन का आविर्भाव

दूसरा अध्याय हिंदी कथा-साहित्य में महिला लेखन के आविर्भाव तथा विभिन्न युगों के नारी जीवन का सरोकार है। यहाँ नारी जागृति के विभिन्न चरणों पर विचार-विमर्श छोड़ा गया है। वैदिक कालखंड में गरिमा से आच्छादित नारी जीवन वर्तमान अरसे तक की रवानगी में विभिन्न प्रतिबन्धों से गुज़रने को बाध्य हुई। पुरुष सत्ता द्वारा निर्धारित सामाजिक मान्यताएँ उसे कठघरे में घुमाने लगी। अशिक्षा, अज्ञान एवं पारंपरिक सामाजिक रूढ़ियों से बँधी नारी हताश जीवन बिताने लगी। इस सिलसिले में पुरुष लेखन के मुकाबले स्त्री लेखन को ज्यादा पुरजोर एवं असरदार ठहराने का प्रयत्न हुआ। नारी अपने जीवन के भीतरी परतों में तराशकर सामाजिक यंत्रणाओं एवं बेड़ियों से अपनी रिहाई की कामना की। इसकी पूर्ति में महिला लेखिकाओं ने अहम भूमिका निभाई।

इधर चहार दीवारी में कैद नारी अपनी प्रगति का पंथ प्रशस्त करने लगी। वैज्ञानिक प्रगति से नारीवादी चिंतन, नारी मुक्ति आंदोलन और नारीवादी साहित्य भी उलफुल्ल हुए। इस सिलसिले में पुरुष दृष्टि एवं पुरुष भाषा में उत्सर्जित साहित्य परंपरा को तजकर स्त्री-दृष्टि में रचित साहित्य साधना का प्रादुर्भाव हुआ। महिला लेखिकाओं ने स्त्री-पुरुष संबन्धों

को दाम्पत्य संबन्धों के परे देखने परखने की कोशिश की। इन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के अर्थाधिकार एवं सत्ताधिकारों को भी प्रश्रय दिया। महिला लेखन ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की कामना में विवाह की अवधारणा, पति-पत्नी संबन्धों और स्त्री-पुरुष के उन्मुक्त रिश्तों को पुनः परिभाषित करना प्रारंभ किया। इस प्रकार नारी की, व्यवस्था एवं पारिवारिक जीवन के प्रति नया रुख महिला लेखन की प्रत्यभिज्ञान बनी। अतः हिंदी में स्त्री लेखन की तस्वीर और उसकी प्रगति का ग्राफ पुरुष लेखन से नितांत भिन्न स्तर पर है।

तृतीय अध्याय
उषादेवी मित्रा के कथा-साहित्य का विश्लेषण

तृतीय अध्याय उषा जी के कथा-साहित्य के सांगोपांग विवेचन से संपुष्ट है। इसमें बालविवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह का निषेध, वेश्या जीवन की विसंगतियाँ, परित्यक्ता नारी का मानसिक द्वन्द्व आदि नारी जीवन की विषमताओं पर दृष्टिपात किए गए है। उषा जी का प्रथम उपन्यास 'वचन का मोल' नारी के त्यागमय कमनीय प्रेम और अचंचल पातिव्रत्य का परिचायक है। बालविधवाओं की मानसिक प्रताड़ना से निसृत 'पिया' में उषा जी ने विधवा विवाह को प्रश्रय दिया है। 'जीवन की मुस्कान' में वेश्या एवं परित्यक्ता नारी मन के कारुणिक पक्षों को उभारा है। रूपरेखा एवं पूरबी प्रताड़ित ज़िन्दगी को भी सहर्ष से आत्मसात करनेवाले नारी मन का प्रतीक है। प्रेमी से अलग होने के बावजूद भी अचंचल पवित्र प्रेम की हिमायती 'सोहिनी' नारी की प्रबल इच्छाशक्ति का मूर्तरूप है। विधवा जीवन की विसंगतियों से आलोकित 'सम्मोहिता' में विधवा कुन्तला के आदर्श स्वरूप का रूपायन हुआ है। विधवा कुन्तला अपने निष्ठावान चरित्र एवं पूजनीय व्यक्तित्व से सबके आदर का पात्र बनती है। 'सम्मोहिता' में अपने अनुकरणीय चारित्रिक गरिमा से औरों को भी प्रभावित करनेवाली कुन्तला का चयन हुआ है। नायक प्रधान उपन्यास 'पथचारी' में बेकारी से उद्‌भूत अभावग्रस्तता एवं रिक्तता की समस्या उठाई गई है। विभाजन की कटुताओं से प्रणीत 'नष्टनीड़' की नन्दा में नारी के स्वाभिमान एवं आत्मनिर्णय

का स्वरूप प्रतिबिम्बित है। अपने मित्र के साथ रहने को विवश सुनंदा अचंचल पातिव्रत्य का सरोकार है। 'मातृत्व' की सुप्रभा, 'मृत्युंजयी' की सीता, 'उन्नीस सौ पैंतीस' की सविता एवं 'समझौता' की जिठानी विधवा जीवन की विसंगतियों का मूर्त स्वरूप है। 'पपीहरा' की सुप्रिया, 'परिचय' की परी एवं 'ललिता की डायरी' की दीपाली परित्यक्ता के क्रंदन का परिचायक है। 'सुन्दर' की मल्लिका, 'स्मृति की पूजा' की सुरंगी और 'जीवन का एक दिन' की परमा वेश्या नारी की मानसिक विच्छृंखलताओं से आलोकित है। इस प्रकार नारी जीवन की बहुमुखी समस्याओं के सांगोपांग विवेचन में उषा जी ने कमाल हासिल की है।

चौथा अध्याय

उषादेवी मित्रा के कथा-साहित्य में नारी जीवन का परिदृश्य

इस अध्याय में उषाजी के कथा-साहित्य में उद्‌भूत नारी जीवन के मानसिक एवं शारीरिक बदलावों पर दृष्टिपात किए गए है। परंपरागत नारी शोषण के ख़िलाफ चुप्पी साध रही थी। इधर उषा जी के नारी पात्र अपने ऊपर लगाये गए सामाजिक पाबंदियों को ललकारती है। 'पिया' की नीलिमा और 'उन्नीस सौ पैंतीस' की सविता बालविवाह से अभिशप्त नारी जीवन का दर्पण है। 'पिया' की नीलिमा में बालविवाह का सख्त विरोध द्रष्टव्य है। सामाजिक विधि निषेधों से तंग बालविधवा नीलिमा ख़ुदकुशी का सहारा लेती है। उषा जी ने अपनी रचनाओं में त्रस्त, क्लांत विधवाओं के भीतरी ध्वंस को भी शब्दबद्ध किया है। 'वचन का मोल' की प्रतिमा अपने वैधव्य को बिना कोसे पुत्री कजरी को आत्मनिर्भर बनाने के सतत प्रयास में लगी रहती है। 'भूल' की विधवा सुप्रभा शिक्षा के बदौलत अपने अभिशप्त जीवन को संवारने का इरादा रखती है। 'सम्मोहिता' की कुन्तला विधवा नारी के विद्रोहात्मक स्वरूप का परिचायक है। वह अशिक्षा, बालविवाह, छुआछूत, कुरूपता आदि सामाजिक पाबन्दियों के ख़िलाफ आवाज़ बुलंद उठाती है। कुन्तला बंधनों में जकड़ी, मुक्ति के लिए छटपटाती विधवा नारी के आंतरिक विस्फोटन की जीवंत गाथा है। 'जीवन की मुस्कान' की पूरबी उन हज़ारों वेश्या नारियों की प्रतिनिधी है, जो अपने अंदर कठोर नियति को कोसती रहती है। 'परिचय' की नायिका परी एवं 'जीवन की मुस्कान' की रूपरेखा उषा जी की परित्यक्ता नारी की सबल मानसिकता का दस्तावेज है। रोती कलपती ज़िन्दगी से वे नफरत करती है। अपनी आंतरिक शक्ति से अवगत, पति परित्यक्ता सुशिक्षित रूपरेखा पति पर काबू पाने में सफल

दीखती है। उषा जी ने परी और रूपरेखा में परित्यक्ता नारी की बदलती छवि को संजोये है।

उषा जी के सुशिक्षित नारी पात्र प्राचीन रूढ़ी-रिवाज़ों को नकारने लगी है। 'सम्मोहिता' की विधवा कुन्तला शिक्षा से अर्जित ज्ञान के आलोक में प्राचीन पाबन्दियों को ललकारती है। 'जीवन की मुस्कान' की रूपरेखा उषा जी की सुशिक्षित प्रतिक्रियावादी नारी का मूर्तरूप है। 'खिन्न पिपासा' की साकी और 'परिचय' की परी शिक्षा और नौकरी के बूते नारी स्वावलंबन पर बल देती हैं। 'समस्या' की अमला, 'सोहिनी' की सोहिनी और 'पिया' की पिया अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं। 'वचन का मोल' की कजरी, नौकरी पेशा नारी की बदलती मानसिकता का परिचायक है। कजरी की अवधारणा एक पूर्ण देश-प्रेमी के रूप में भी हुई है। 'खिन्न पिपासा' की चित्रा, 'मन की देन' की कमला एवं 'कल्पना की देन' की रमला अपने कार्यक्षेत्रों में अविचलित रहती है। संक्षेप में उषा जी का कथा-साहित्य नए नैतिक प्रतिमानों को प्रोज्वलित करनेवाले नारी जीवन का सरोकार है।

शैली हर रचनाकार के विशिष्ट अस्तित्व का द्योतक है। उषादेवी मित्रा हिंदी कथा-साहित्य को भाषा-शैली के चमत्कारों से वैभवान्वित करने में सिद्ध-हस्त हुई है। तत्सम भाषा के व्यवहार में उषा जी ने कमाल हासिल की है। उनके समस्त कथा-संसार तत्सम भाषा के प्रयोग से परिपूर्ण है। 'सम्मोहिता', 'जीवन की मुस्कान' और 'वचन का मोल' में मुहावरे एवं कहावतों का सम्यक परिपाक हुआ है। 'सांध्यपूरबी' विवरणात्मक शैली का परिचायक है। उषा जी की 'नीम चमेली' आत्मकथात्मक शैली का उत्तम निदर्शन है। 'मेघमल्लार' डायरी शैली के आकलन से परिपूर्ण है। उर्दू, फारसी एवं अंग्रेज़ी भाषा के समुचित प्रयोग ने उषाजी की रचनाओं को सृजनशीलता के चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया है।

पाँचवाँ अध्याय
उपसंहार

पाँचवाँ अध्याय उपसंहार है। वैदिक कालीन नारी सम्मानजनक जीवन की अधिकारिणी थी। परन्तु मध्यकाल की ओर रवानगी के साथ उसकी हैसियत ह्रासोन्मुख हो गई। तब तक नारी मात्र उपभोग की वस्तु रह गई। कालान्तर में नारी की स्थिति में बदलाव लक्षित हुआ। आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, थियोसोफिकल सोसाईटी जैसे सामाजिक आन्दोलनों से नारी प्रभावित होने लगी। सादियों से उपेक्षित एवं क्लांत नारी प्रत्येक सुधार आन्दोलनों का आधार बनी। इस सिलसिले में शिक्षा से लाभान्वित नारी नौकरी के बल पर जागृति के पड़ाव चढ़ने लगी। उसकी स्वतंत्र अस्मिता की पहचान साहित्य में भी हलचल मचाने लगी। नारी की यह चेतना जन्य साहित्य महिला लेखन की संज्ञा से अभिहित हुई। महिला लेखिकाओं में ख्याति प्राप्त उषादेवी मित्रा ने नारी जीवन के सहज और स्वाभाविक प्रवाह में अपने कथा-साहित्य की नींव डाली। नारी जीवन में प्रचलित शैशव विवाह, दहेज-प्रथा, वैधव्य, अकेलापन, रुग्णावस्था आदि वैयक्तिक जीवन की कठोर विसंगतियाँ उषा जी के कथा-संसार के जीवंत पहलू रहे। गरीबी, विपन्नता एवं एकाकीपन से त्रस्त नारी जीवन का पर्दाफाश उषा जी का ध्येय रहा। उन्होंने तद्युगीन नारी मानस को समग्रता में आत्मसात करने की भरसक कोशिश की। समाज में युगों से उपेक्षित, उत्पीड़ित एवं क्लांत

नारी की मुक्ति को उषा जी ने अपना ध्येय रखा। इस संदर्भ में उषा जी ने बालविवाह, पर्दा-प्रथा, दहेज-प्रथा, सती-प्रथा और वेश्या वृत्ति का डटकर विरोध किए। 'वचन का मोल' की कजरी, 'जीवन की मुस्कान' की रूपरेखा, 'परिचय' की परी, 'सम्मोहिता' की कुन्तला और 'पिया' की पिया उषा जी के जागृत नारी पात्र हैं। इन नारी पात्रों के मार्फत उषा जी ने अपने युग के उपेक्षित, पीड़ित और त्रस्त नारी को मुक्ति का पंथ प्रशस्त कर दिया। इधर उषा जी ने नारी को पुरुष की प्रतिद्वन्द्विनी के सिवाय सहगामिनी के रूप में प्रश्रय दिया है।

उषा जी का कथा-साहित्य भारतीय नारी की ज्वलंत संघर्ष गाथा का मूर्त रूप है। उनके नारी पात्र परंपरागत नैतिक प्रतिमानों को तजकर संपूर्ण आज़ादी को अपने वजूद से ज़ोडने की कोशिश किए हैं। भारतीय नारी के मुक्ति संघर्ष के सांगोपांग आकलन से परिपूर्ण उषा जी का कथा-संसार अपने में पूर्ण है। इस प्रकार नारी जागृति में अमिट छाप लगानेवाली भारतीय महिला लेखिकाओं में श्रीमती उषादेवी मित्रा शिखरस्थ स्थान के योग्य है।

Signature of Supervising Teacher:

Name & Designation of Supervising Teacher : Dr. K.M. MATHEW
Head
P.G. & Research Dept. of Hindi
St. Thomas College, Pala

Place: Pala

Date :